
आलस्य और अलबेलापन - 34

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » बापदादा यह रिजल्ट देख रहे थे कि आदि से अब तक हरेक बच्चा हिम्मत के आधार पर मदद के पात्र बन कहाँ तक सहज पुरुषार्थी बन आगे बढ़े हैं, कहाँ तक पहुँचे हैं तो क्या देखा? **बाप की मदद अर्थात् दाता की देन, वरदाता के वरदान तो सागर के समान हैं।** लेकिन सागर से लेने वाले कोई बच्चे सागर समान भरपूर बन औरों को भी बना रहे हैं और कोई बच्चे मदद के विधि को न जान मदद लेने के बजाये अपनी ही मेहनत में कभी तीव्रगति, कभी दिलशिकस्त के खेल में नीचे-ऊपर होते रहते हैं और कोई बच्चे कभी मदद, कभी मेहनत।

» _ » बहुत समय मदद भी हैं लेकिन कहाँ-कहाँ अलबेलेपन के कारण मदद के विधि को अपने समय पर भूल जाते हैं और हिम्मत रखने के बजाए अलबेलाई के कारण अभिमान में आ जाते हैं कि हम तो सदा पात्र हैं ही, बाप हमें मदद न करेंगे तो किसको करेंगे, बाप बांधा हुआ है। **इस अभिमान के कारण हिम्मत द्वारा मदद की विधि को भूल जाते हैं।** अलबेलेपन का अभिमान और स्वयं पर अटेन्शन देने का अभिमान मदद से वंचित कर देता है।

» _ » समझते हैं अब तो बहुत योग लगा लिया, ज्ञानी तू आत्मा भी बन गये, योगी तू आत्मा भी बन गये, सेवाधारी भी बहुत नामीग्रामी बन गये, सेन्टर्स इन्चार्ज भी बन गये, सेवा की राजधानी भी बन गई, प्रकृति भी सेवा योग्य बन गई, आराम से जीवन बिता रहे हैं। यह है अटेन्शन रखने में अलबेलापन। इसलिए जहाँ जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का अटेन्शन, बेहद के वैराग वृत्ति का अटेन्शन देना है - इसे भूल जाते हैं।

» _ » ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृत्ति पर, स्टूडेंट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे।

» _ » सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। **इसको कहते हैं-एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना।** तो बापदादा देख रह थे कि कई बच्चे मदद के पात्र होते भी मदद से वंचित क्यों रह जाते? इसका कारण सुनाया कि हिम्मत के विधि को भूलने कारण, अभिमान अर्थात् अलबेलापन और स्व के ऊपर अटेन्शन की कमी के कारण। विधि नहीं तो वरदान से वंचित रह जाते। सागर के बच्चे होते हुए भी छोटेछोटे तालाब बन जाते। जैसे तालाब का पानी खड़ा हुआ होता है ऐसे पुरुषार्थ के बीच में खड़े हो जाते हैं। (22.11.1987)

»_» यह ड्रामा में विधान है,

→ की जिसकी जितनी हिम्मत

■ उतनी बाबा की मदद स्वतः मिलती ही है

► जितनी हिम्मत करते हैं उसके आधार से

► उसकी राजधानी बनती है

»_» कई बच्चे समझते हैं की,

→ हम तो मदद के पात्र हैं ही

■ इसलिये हिम्मत ही नहीं रखते

► और अपने सूक्ष्म अभिमान में रहते हैं

➤➤ अटेंशन

»_» सूक्ष्म अभिमान आ जाता है

→ तो अटेंशन भी कम हो जाता है

»_» किस और अटेंशन कम हो जाता है ?

→ स्वयं पर अटेंशन

→ वैराग्य पर अटेंशन

→ सेवा पर अटेंशन

→ पढाई पर अटेंशन

→ पुरुषार्थ की विधि पर अटेंशन

→ निरंतर स्वयं को स्टूडेंट समझने पर अटेंशन

■ यह सब अटेंशन रखने से

■ एक कदम की हिम्मत करने से

► पद्म गुना मदद के पात्र बन जाते हो

➤➤ किस में हिम्मत रखनी है, तो मदद मिलेगी ?

»_» कोई धारणा करने में हिम्मत चाहिये

→ सबसे पहले ज्ञान धारण करने में हिम्मत चाहिये

»_» अपने लिये कोई नियम बनाने में हिम्मत चाहिये

→ अगर कोई छोटा सा भी नियम है, और हम हिम्मत करें

■ की आज मुझे यह करना है

► तो फिर मदद मिलेगी

»_» पढाई के लिये लक्ष्य रखने की हिम्मत चाहिये

→ यह जो मुरली है मुझे उसे डायरेक्ट नहीं सुनना है

→ पहले स्वयं पढनी है

→ समझना है

→ चिंतन करना है

■ बाद में ही क्लास में जाना है

► तो ही फिर क्लास में सुनने से हमें फायदा ज्यादा

होगा

► सुनी हुई बातें बहुत लम्बे समय तक याद रहती हैं

»→_»→ ऐसी छोटी छोटी बातों में पहले हिम्मत रखो, तो मदद स्वतः मिलेगी

»→_»→ अमृतवेले के बाद न सोने का नियम बनाने में हिम्मत चाहिये

→ नींद तब आती है जब कोई लक्ष्य नहीं होता है

→ जब कोई श्रेष्ठ संकल्प नहीं है, तब नींद आती है

»→_»→ क्लास के बाद भी कई लोग सो जाते हैं, वो गलत है

→ क्लास के बाद

■ जो सुना है, उसको याद करना है

■ उसका चिंतन करना है

■ जो सुना है, उसको जीवन में कैसे APPLY करें

► उसके बारे में सोचना है

► इन सबका भी अगर चिंतन करेंगे तो नींद नहीं

आयेगी

»→_»→ मुरली को पढ़के उसमें से रोज कुछ HOME WORK अपने लिये निकालने की भी हिम्मत चाहिये

→ की आज की मुरली में बाबा ने मेरे लिये क्या कहा है

→ कौनसी ऐसी बात है,

■ जो मेरे जीवन में PRACTICAL में अभी MISSING है

► जो मुझे लागू करनी है

»→_»→ योग के सब्जेक्ट में भी आगे बढ़ने में हिम्मत चाहिये

→ अभी जो मेरी योग की स्थिति है

■ उसमें ज्ञानमई योग कितना है चेक करो ?

■ क्या कर्म करते हुये योग की अवस्था है ?

► क्या कर्म करते हुये

► व्यक्त से अव्यक्त

► आवाज में रहते आवाज से परे

► बाह्यमुखता से अंतरमुखता

► गम्भीरता और रमनिकता

► इन सबका बैलेंस रहता है ?

■ अगर यह कम ज्यादा है तो उसको ठीक करना है

»→ _ »→ कोई हमें गाली दे रहा है, फिर भी तटस्थ रहने / शांत भाव से रहने के लिए हिम्मत चाहिये

→ अपने आपको हर परिस्थिति में शांत रखना चाहिये

- चाहे कितनी भी EMERGENCY CONDITION क्यों न हो
- हिलाने वाली परिस्थिति भी क्यों न हो
 - ▶ पर हमें अपनी अवस्था अचल अडोल बनाय रखनी है

»→ _ »→ समय पर बाबा की शिक्षा याद आ जाना ही, तीव्र पुरुषार्थ है

→ बुद्धि में है

→ डायरी में है

- पर समय की डायरी में दिखाई नहीं देता है
 - तो उसकी विधि है
 - ज्ञान की पॉइंट्स को
 - ▶ बार बार **REVISE** करना
 - ▶ अनुभव में लाना
 - ▶ चेक करना
 - ▶ और चेंज करना
 - तो यह ज्ञान योग सहज है
 - ▶ नहीं तो बहुत मुश्किल है
-